पद १२२

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी)

राजयोगामाजीं राजा। करा आत्मिलंग पूजा।।१।। नामघोष हे उत्तम। मुखी म्हणा अहंब्रह्म।।२।। साक्ष माझी उपासना। मिथ्या पंचभूत जाणा।।३।। मिथ्यापण हे पूर्ण ब्रह्म। गुरुज्ञानाचें हें वर्म।।४।। रामकृष्णानंत रूप। अवघा चिदात्मा तो एक।।५।। द्वैत न साहे जगदीशा। जावें वैकुंठकैलास।।६।। गेला उपासनेचा भेदू। झाला आनंदी आनंदू।।७।। शिवमार्तांड माणिक। पूर्ण परब्रह्म एक।।८।।